1981 - 2001 उच्च वृद्धि परंतु मन्द होने के स्पष्ट चिन्ह

राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों मे जनसंख्या वृद्धि दर (2001)
वर्ष 1991 - 2001 की जनगणना अवधि के दौरान केरल मे सबसे कम 9.43 और नागालैंड मे सबसे अधिक 64.53 % जनसंख्या वृद्धि दर्ज की गई है। दिल्ली मे अत्यधिक 47.02 %, चंडीगढ़ मे 40.28 % और सिक्किम मे 33.06 % जनसंख्या वृद्धि दर्ज की गई है। इसके मुकाबले केरल, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश मे 1991 - 2001 के दौरान जनसंख्या वृद्धि काफी कम रही है।

2001 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या का घनत्व
जनसंख्या घनत्व का अभिप्राय किसी देश मे रहने वाले व्यक्तियों की प्रति वर्ग किलोमीटर औसत संख्या से है। किसी देश या क्षेत्र की कुल जनसंख्या को वहा के कुल क्षेत्रफल से भाग देकर उस देश या स्थान की जनसघनता मालूम की जा सकती है। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत का जनघनत्व 324 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। प्रमुख राज्यों मे पं० बंगाल अभी भी सघन आबादी वाला राज्य है। 2001 मे यहां की आबादी का घनत्व 903 था। बिहार दूसरे स्थान पर है, 2001 के अनुसार यहां 880 घनत्व था आबादी के घनत्व के हिसाब से केरल का स्थान तीसरा है, 2001 के अनुसार यहां 819 घनत्व था।

जनसंख्या मे स्त्री - पुरुष अनुपात (1901 - 2001) :— स्त्री - पुरुष अनुपात का अभिप्राय प्रति 1000 पुरुषों के अनुपात मे स्त्रियों की संख्या से है। 20 वी शताब्दी के आरंभ अर्थात् 1901 मे यह अनुपात 972 थी, जबकि 1951 मे यह 946 और 2001 मे यह 933 हो गई।

भारत मे साक्षरता - दर (1951 - 2001) — किसी भी देश की जनसंख्या का गुणात्मक पहलू बड़ी सीमा तक साक्षरता के स्तर पर निर्भर करता है। दुर्भाग्यवश साक्षरता की दृष्टि से भारत की स्थिति

Scanned with CamScanner

बहुत असंतोषजनक रही है। 2001 की जनगणना के अनुसार देश में साक्षरता दर 65.26% तथा महिलाओं की साक्षरता दर 53.67% है।

2001 के जनगणना में उस व्यक्ति को साक्षर माना गया है। जिसकी उम्र 7 वर्ष या उससे अधिक है तथा जो किसी भी भाषा में समझकर उसे लिख पढ़ सकता है। ऐसे व्यक्ति को साक्षर नहीं माना जो केवल पढ़ सकता है लेकिन लिख नहीं सकता। 2001 की जनगणना के अनुसार साक्षरता का स्तर केरल में सबसे अधिक (91%) और बिहार में सबसे कम (47%) है।

भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण :—

i) ऊँचा जन्मदर
ii) शिक्षा का निम्न दर
iii) परंपरावादी समाज
iv) संयुक्त परिवार
v) आर्थिक कारण
vi) उर्वर जलवायु
vii) विवाह की अनिवार्यता
viii) मृत्यु दर की कमी
ix) शहरीकरण का नीचा स्तर
x) परिवार नियोजन उपायों का सीमित उपयोग

भारत में जनसंख्या नीति :— जनसंख्या नीति सरकार द्वारा देश की जनसंख्या का आकार तथा संगठन में किसी सरकारी नियम या निर्देश के द्वारा परिवर्तन लाने का किया गया प्रयत्न होता है ये बातें निम्नलिखित है :—

1) आवश्यकतानुसार जनसंख्या में वृद्धि या कमी लाना।
2) जनसंख्या नीति के अंतर्गत नियम कानून बनाना
3) जनसंख्या की संरचना में परिवर्तन
4) जन्मदर तथा मृत्युदर में कमी लाना।

Scanned with CamScanner

जनसंख्या नीति 2000 :— केन्द्र सरकार द्वारा छोटे परिवार को प्रोत्साहन देने के लिए 15 फरवरी 2000 को नई राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 की घोषणा हुयी। इसके तहत निम्न प्रावधान है :—

(a) बालविवाह निरोधक अधिनियम प्रभावी ढंग से लागू हो।
(b) प्राथमिक शिक्षा मुफ्त तथा अनिवार्य हो।
(c) जन्म, मृत्यु, विवाह का पंजीकरण अनिवार्य हो।
(d) गरीबी रेखा से नीचे जीवन बसर करने वाले के छोटा परिवार हेतु 5000 का स्वास्थ्य बीमा मिले।
(e) गैर सरकारी संस्था को परिवार नियोजन कार्यक्रम को प्रचार-प्रसार सफलता के लिए लगाये जाये।

राष्ट्रीय स्थिरता कोष :— नई जनसंख्या नीति के अंतर्गत निर्धारित स्थिरीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केन्द्रीय मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति ने Feb 2003 में राष्ट्रीय जनसंख्या स्थिरीकरण कोष के गठन के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की है। जून 2003 में यह अस्तित्व में आया और इसका वित्तपोषण 100 करोड़ के प्रारंभिक राशि किया गया है।

भारत में नगरीकरण

* सिंधु सभ्यता के काल से ही भारत में नगरों का अस्तित्व रहा है। आधुनिक काल में यूरोपियों के भारत आगमन के बाद जो नगरीकरण की तीव्र प्रक्रिया शुरू हुई, वह आज तक जारी है। वर्तमान के लगभग 100 ग्रामों नगरों का इतिहास मध्यकाल से जुड़ा है। इनमें से अधिकांश का विकास रजवाड़ों और राज्यों के मुख्यालयों के रूप में हुआ। ऐसे नगरों में दिल्ली, हैदराबाद, जयपुर, लखनऊ, आगरा आदि उल्लेखनीय है। सूरत, गोवा, कलकत्ता, पांडिचेरी आदि आधुनिक नगर है, इनका विकास भारत में यूरोपियनों के आने बाद हुआ।

नगरीकरण का अर्थ है शहरों में जनसंख्या का केन्द्रीकरण अर्थात् जनसंख्या का वह हिस्सा जो नगरों में निवास करता है।

Scanned with CamScanner